पाठ 16. रहीम के दोहे

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। कवि रहीम के दोहे सामान्य जीवन के गूढ़ रहस्यों की परतें खोलते हैं। उन दोहों में नीति व उपदेशों का ताना-बाना सहज ढंग से बुना हुआ होता है।

पाठ का सार

रहीम कवि कहते हैं कि आपस में प्रेम-भाव सदैव बना रहना चाहिए।

रहीम कवि का कहना है कि जिस प्रकार हीरा अपना मोल नहीं बताता है उसी प्रकार बड़े लोग भी अपने बड़े होने का घमंड नहीं करते हैं।

कवि का कहना है कि जिस प्रकार चंदन के पेड़ से सर्पों के लिपटे रहने पर भी चंदन की खुशबू समाप्त नहीं हो पाती, उसी प्रकार सज्जन पुरुष भी अपनी सज्जनता पर आँच नहीं आने देते हैं।

रहीम कवि मन की व्यथा को सार्वजनिक नहीं करने की सलाह देते हैं।

रहीम कवि के अनुसार मोती की चमक, मनुष्य की इज़्ज़त और चूने का जल ही उसे अनमोल बनाता है।

रहीम कवि कहते हैं कि माँगना बुरी बात है लेकिन उससे भी बुरी बात है किसी के माँगने पर उसे कुछ न देना।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  रहीम कवि के दोहे नीतिपरक हैं। एक-एक दोहे का अर्थ समझाएँ। उन अर्थों को आज के संदर्भ में बताएँ। प्रत्येक दोहे के लिए दैनिक जीवन से उदाहरण दिया जा सकता है। साँप, हीरा, मोती, चूना, आदि के बारे में विशेष रूप से चर्चा की जा सकती है।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 93** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - अभ्यास में दो-दो समानार्थी शब्द पूछे गए हैं लेकिन बच्चों से कई शब्द पूछे जा सकते हैं। इसके लिए यह किया जा सकता है कि एक बच्चा एक शब्द बताए, दूसरा बच्चा अन्य शब्द और तीसरा बच्चा कोई अन्य शब्द बताए।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - वाक्य का गठन सटीक हो, वाक्य छोटे हों, उनमें लिंग-वचन संबंधी त्रुटियाँ न हों, इसका विशेष ध्यान रखें। यदि त्रुटियाँ हों तो उनका निराकरण भी करते जाएँ।